

श्री बद्रीनाथ जी की आरती

जय जय श्री बद्रीनाथ,
जयति योग ध्यानी ॥ टेक ॥

निर्गुण सगुण स्वरूप,
मेधवर्ण अति अनूप ।

सेवत चरण स्वरूप,
ज्ञानी विज्ञानी । जय...

झलकत है शीश छत्र,
छवि अनूप अति विचित्र ।

बरनत पावन चरित्र,

स्कृचत बरबानी । जय...

तिलक भाल अति विशाल,

गल में मणि मुक्त-माल ।

प्रनत पल अति दयाल,

सेवक सुखदानी । जय....

कानन कुण्डल ललाम,

मूरति सुखमा की धाम ।

सुमिरत हों सिद्धि काम,

कहत गुण बखानी । जय...

गावत गुण शंभु शेष,
इन्द्र चन्द्र अरु दिनेश ।

विनवत श्यामा हमेश,
जोरी जुगल पानी । जय...

